

१५६
व गेता मुरवी दी प
दा ना वि प्ये स्तो ज
हो मा वे चि

ASHA ARCHIVES

३३८८

यागोरांगिपीतांवसे॥ विघ्नोघंवगलेहनप्रणामतांकारुण्यपपूर्णेक्ष
रौ॥७॥ मातर्भैरवीभद्रकालिविजयवाराहिविश्वाश्रयेः श्रीविश्वे
समयेमहेसिवगलेकाभशिवालेरमे॥ मातर्भिः त्रिपुरेपरापरत
रेश्वराणां पवर्गाप्रदेदासाहंशरनागतः करुनयाविश्वेश्वरीग्राहि
मां॥८॥ संरम्भवोरसंधेप्रहरणसमयेवन्धनेव्याधिमध्वेश
वादेविवादेप्रकुपितेनृपतौदिव्यकालेनिष्पत्त्यां॥ वश्येवारु

मनेवारिपुवधसमयेनिर्जनेवावनेवागच्छतित्रिकालंय
दिपठतिशिवंप्राप्नुयादाशुधीरः॥१॥ न्वंविद्यापरमाच्चिलौक
जननीविघ्नोद्यसंछेदनीयोषाकर्षराकारिराजीजनमनःसं
मोसंदायनी॥ संशत्सारराकारिराजीपशुमनःसंमोहसंदाय
राजीजिह्वाकीलनेभैरवीविजयतेवह्मादिमन्त्रोमेथा॥१०॥
विद्यालक्ष्मीसर्वसौभाग्यमायुपुत्रैःपौत्रैःसर्वसाम्राज्यसिद्धि

मू॥मानंभोग्यंवश्यमारोग्यसौख्यंप्राप्तद्वद्धूतलेस्मिन्नस्तरेण॥
॥११॥ न्वत्कृतंजपसंभाहंगदितुंपरमेश्वरी॥ दुष्टानांनियहार्थाय
तंगृहणानमोस्तुते॥१२॥ इतिश्रीरुद्रजामलेवगलामुखीदेव्या
स्तोत्रसंपूर्णम्॥ ॥सम्बत२७८६वैत्रशुक्लदिनवरीज७थकुरु
श्रीवाग्पतिराजेनेलिखितम्॥ ॥ शुभम्॥ ॥ ॥ ॥



वग

नामस्वीयन्तुम्



सोवर्णवाप्यथत्राप्सवाप्येदिलवाथरज्जक ॥ कर्पूत्रागुनूकस्तु
नी. श्रीखण्डकस्तुमेवपि ॥ लिखितं प्रयत्ननलखयाहमता
नथाः ॥ ॥

अथ प्रीताम्वनस्पृशयती॥ ॐ वृं क्रा म्द्राय विद्महं कर्म रत्नवाना यधी
महीत आवगता प्रथी दयान् ॥ ॥ अथ वगलाष्टा पमाचन ॥ मंत्र ॥ ॐ
की वंगल रुद्रा प्रयत्ना पंमावय २ की ॐ स्वाहा ॥ ॐ उत्कीलन ॐ
स्वाहा ॥ संजीवनं ॥ ॐ इं स नू द्वा पंमावय २ स इं ॐ स्वाहा ॥ ॐ नी
लकं ॥ इव सिक्कं ॐ पंमावय २ स्वाहा ॥ १ ॥ मूल ॥

श्री ग रक्ष मायनमः ॥ ॐ व ग लामू र्वी द्यो नमः ॥ ॥ अथ वगलामू
र्वी द्यो दी पदान विधि सिक्कन ॥ ॥ तत्रा दो सर्व सामग्री सज्जी क
र्या ॥ यजमान नाच मय च न्य नादि गिन सित खनं ॥ सूर्यो र्ध्व ॥ अथादि
वाक् ॥ पूषण जन जाप ॥ ॐ सिद्धि न मु क्रिया न भूति वाक् ॥ नमस्का
न ॥ आचार्य पूजा ॥ पूषण जन समर्पणं ॥ ॥ आचार्य न पूषण जनं ग

हित्वाः उल्लासः ॥ धनं ॥ चनाङ्कनं ॥ ॐ क्लीं नमः ॥ १ ॥ धनं ॥ क्लीं क्लौं वनू धाद
 वी ॥ ३ ॥ गवाक्षी विनाचनं ॥ क्लीं क्लौं आत्मनस्वाय स्वाहा ॥ क्लीं क्लौं विशा
 नस्वाय स्वाहा ॥ क्लीं क्लौं शिवनस्वाय स्वाहा ॥ १ ॥ धनं ॥ ॥ गंगा सामा
 न्यार्घ्यपात्रं ॥ क्लीं आधानं ॥ क्लौं क्लौं दित्या ॥ क्लीं क्लौं दानार्घ्यं साध
 यामि ॥ जलं न प्रकालयथा ॥ रुदिनिमन्त्रं ॥ नमः मन्त्रं धौ पुनश्च जलं
 त् ॥ ॐ चन्दनाङ्कनपूष्पं ॥ गन्धपूष्पदूर्वाङ्कनानि निक्षिप्यतीर्थं न्याव

हय ॥ क्लीं क्लौं गच्छ वज्रमूनचति ॥ धनं मुद्रादर्थं यत् ॥ वौ ॥ मूलन
 ॥ धनं दक्षिणं ॥ रुदिनिमन्त्रं ॥ गालययदिस्वन्धनं ॥ ४ ॥ ॥ गद
 र्घ्यजलं न दानं प्रोक्तं यत् ॥ ॐ क्लीं वगलामूर्खी विद्मह सर्वदूषणं
 सन्निहन्ती धीमहि ॥ गन्नादेवी प्रसादयात् ॥ क्लीं वृद्धिं विना सैव भूत्वा
 यत् ॥ ॥ गन्नादानपूजा ॥ ५ ॥ ॐ विद्महे नमः ॥ दक्षिणं ॥ ॐ
 महालक्ष्मी नमः ॥ वामं ॥ ॐ सनस्वत्ये नमः ॥ पूनर्दक्षिणं ॥ ॐ

गौविधायनमः॥ॐ गङ्गाय नमः॥ॐ यैयमूनायैः॥वाम॥ॐ शौं कृष्ण
 यनमः॥ॐ गङ्गाय नमः॥ॐ सिंधवनमः॥ॐ यैयमूनायै नमः॥ ॥पू
 नर्द्धक॥ॐ धायनमः॥वाम॥ॐ विधायनमः॥ ॥पू नर्द्धक॥ॐ शौं कृष्ण
 खनिदिदपिगायानमः॥वाम॥ॐ पंपदनिधिदपिगायानमः॥
 ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं नदवगादिद्यानमः॥ श्रीं भूवकाय रक्षे नमः॥ श्रीं कं मा
 हर्षयै नमः॥ श्रीं कं माहर्षयै नमः॥ श्रीं वं को मायै नमः॥ श्रीं दं

नदपनिधगासननिधाय॥ पूजा॥ॐ भवानृपाय सर्वसिद्धिनायपा
 वेषुवै नमः॥ श्रीं गं वानाके नमः॥ श्रीं पं रूद्राय रक्षे नमः॥ श्रीं यं चाम् ॥
 नृयै नमः॥ श्रीं शं महालक्ष्मी नमः॥ ॐ गिद्यानपूजा॥ ॥ततः स्वासन
 स्थापनं॥ अर्घ्यजलनपादकर्म॥ ॐ ॥ त्रिकांशं चतुर्गुणं विलि
 ख्यतं सीतपूजयता॥ॐ आ धान भक्तादिद्या ॥ ॐ मिं स्पृ रक्षता॥ॐ पृ
 ध्वीव्यामि नृपुत्रः सूनवः कुम्भाय देवता आसना पर्व सन वि
 निथागः॥ ह्रीं ह्रीं ॥ श्रीं पृथ्वीत्वया धृता लाकाः देवी त्वं विष्णुना धृता
 श्रीं श्रीं ३

॥ त्वंचक्षानयं निगुं पवित्रं कूचामनं ॥ नमस्कात्रं ॥ ॥ गतः सिद्ध
 उने उलन दधदि ग्विकिर्यः विघ्न निवानर्धकूर्यो यथा ॥ ॐ श्री
 भूपसर्पन्तु यद्गता यद्गताः सुविमं स्थिता ॥ यद्गता विघ्नकर्तृ नगनधनु
 भिवाकूया ॥ श्री वृद्धि विना भय भूमा यरुट् ॥ दसदि ग्विकिर्यः ॥ विघ्न
 पिहा वरा लय ॥ ॥ गताने मया दिभि पूजय ॥ श्रीं श्रीं कुरुपाला
 यपापू ॥ श्रीं विं विधाय पापू ॥ ॐ नि पूज ॥ पूनः पूज ॥ ॐ श्रीं भूनन्ता सना

यपापू ॥ ॐ श्रीं विं विमला सनाय ॥ ॐ श्रीं पंपदामनाय नमः ॥ विरक्ष
 ॐ श्रीं भूमका सनाय ॥ ॐ नि मनु ह निन्दको दक्ष ॥ ॐ त्यासन
 स्थापनं ॥ ॥ गता वीना सनाप विष्णु ॥ सूर्यो र्ध ॥ भूया दिवाक् ॥ ॐ श्रीं
 श्रीं सः श्री सूर्यो याध्या नमः ॥ ॐ भूर्धित नि पूज ॥ ॥ गता गुन मधु
 ल पूजा ॥ ॐ गुन त्या ॥ ॐ भूर्धित नि पूजा ॥ मधुल स्थ पूजं स्व
 सिन सिद्ध प्रर्ष ॥ ॥ गता पिदवन मस्कात्रं ॥ वाम ॥ गंग रक्ष भय ॥

४ गतः दीप संस्कात्र विधिवत् ॥ ४

वक् ॥ त्रैगुणवनमः ॥ मरुध ॥ मूलं श्रीमद्वगलामुखीदव्येष्टव
नार्ये ॥ ॥ यदि तिमनु गदधदिग्वन्धनं गालयय पूर्वकनक
योग ॥ ॥ ततोऽङ्गुष्ठमङ्गुलीयांशवदनभूर्ध्वजलनास्त्रिपाका
नान्मानं ग्रामयंश्च ॥ ॥ श्रीं ॐ नमः सुदर्शनाय भूमाय रुद्र ॥ ॥
निमनु गदिग्वन्धनं ॥ ॥ ततः प्राश्नयाम ॥ ॥ मूलाधनस्वाधिस्थानम
निपूनकभूनाहगविष्णुद्विभ्राक्काषद्वक्ध्वनयानावमूलाधनस

आहकृष्णलिनीजीवात्मानापञ्चविंशतिगत्वसहिगनसूषून्नामारर्जन
हंसः धकंथगतयरावसहस्रकमलसञ्चारपनमणिवचनापन्न ॥ थ
बलवदाघातसपापपूनुषध्वनयाय ॥ ॥ ध्वनं ॥ वामकूटिस्थितं
पापं पूनुषं कज्जलप्रहं ॥ वक्कहृत्पाणिनस्त्वन्धस्वर्गुस्तयुजद्वयं ॥
सूनापानंददियूकंगुनूगल्पकटिद्वयं ॥ तत्संस्तुगर्जपदद्वंद्वमंगप्र
पञ्जपाटकं ॥ उपपानैकभामानं नकस्मश्च विलाचनं ॥ खड्गवर्म

चनं कूनं पाप कूडो विचि नथ जा हा क खाल सजा दू ख क स ये रु
ओ दा व वा रु को रु मृ दि राल पा व ऊ व द्वा स ग या व ख व न सा इ
का य ॥ यं १६ पाप पु नू ष ना थ व भू षु द्वा स नी न ना वा यु न ग न के
॥ नं ६४ न पा द्वा स ग या व सा कू रुं म थ ३ ग्नि वी ऊ न उ त्प दि श व भू
ग्नि न पा प पु नू ष ना भू षु द्वा स नी न ना मी न वा य के ॥ यं ३२ ख व
द्वा स ग या ऊ व न सा पिं ग ॥ थ वा यु वी ऊ न उ त्प दि श व वा यु न स

म सं र स प स्यं थ रु राल प ॥ वं १६ ख व द्वा स ग या व ऊ व न सा इ
का य थ व भि न स वा रु च न्द्र म धु ल न भू मृ ग हा स्यं व व राल पा व
थ व भि न सिं व न प ॥ लं ६४ थ पृ थ्वी वी ऊ न न पा दा द्वा स ग या व भ व
नू ग न भू द्वा स नी न उ त्प दि श व राल प ॥ हं ३२ भि व वी ऊ न ऊ व द्वा स ग या व
ख व न सा पिं ग ह स्र पा दा दि स म स्र भि न संपूर्णु श व राल प ॥ सा हं
थ म नु ध भि न स वा रु जी वा सा ष द्वा क पं व र ग का का या व थ व र था य

पदं समुनारर्थजिह्वा कीलनारर्थवृद्धिं विना नारर्थमम सर्वस
 र्वदा सर्वसिद्धारर्थ उपविनीया गः ॥ **ॐ** वृद्धिं विना
 सयं भूमाय रुद्र ॥ चन्दन कया लाहयल ॥ **ॐ** श्रीं अङ्गुष्ठोत्थां २ ॥
ॐ वगलामुखीति कुन्तीयां स्वाहा ॥ **ॐ** सर्वदुष्कर्मो मन्त्रमाभ्यां वा
 षट् ॥ **ॐ** वाचं मुखं पदं समुनारमिकायां हूं ॥ **ॐ** जिह्वा कील
 यकनिष्ठोत्थां वा षट् ॥ **ॐ** वृद्धिं विना सयं कनकलपट्टायां भूमा
 श्रीं **ॐ** स्वाहा १

यरुद्र ॥ **ॐ** श्रीं हार्याय २ ॥ **ॐ** वगलामुखीति नमः स्वाहा ॥ **ॐ** सर्वदु
 श्कानां भिरवाये वषट् ॥ **ॐ** वाचं मुखं पदं समुनारयकवचाय हूं ॥ **ॐ**
 जिह्वा कीलयनं गगनाय वा षट् ॥ **ॐ** वृद्धिं विना सयं भूमाय
 रुद्र ३ ॥ **ॐ** तिकनाङ्गन्यासः ॥ ॥ तनादह्न्यासः ॥ **ॐ** नमः ॥ शि
 नसि ॥ **ॐ** नमः ॥ ललाट ॥ वनमः ॥ क्रमरध्या ॥ गनमः ॥ दडुनय
 ॥ लानमः ॥ वामनय ॥ मूनमः ॥ दङ्गरध्या ॥ खिनमः ॥ वामे ॥

सैनमः॥दङ्कनासिका॥वेनमः॥यामनासिका॥इनमः॥दङ्कगं
ज॥हैनमः॥वामगंज॥नोनमः॥अष्ट॥वोनमः॥अध्वज॥
वेनमः॥मुख॥~~मुख~~॥मूनमः॥चिवूक॥खैनमः॥गले॥पैर
दङ्कवाङ्कमूल॥देनमः॥मध्य॥सैनमः॥मणिवन्ध॥भनमः
अङ्गुलिमूल॥यैनमः॥अग्र॥जैनमः॥वामवाहो॥होनमः
मध्य॥किनमः॥मणिवन्ध॥लेनमः॥अङ्गुलीमूल॥यैनमः॥

अग्र॥वूनमः॥दङ्कानुमूल॥हिनमः॥जानुनि॥विनमः॥गुल्फ॥
नोनमः॥अङ्गुलीमूल॥धनमः॥अग्र॥यैनमः॥वामानुमूल
॥होनमः॥जानुनि॥अनमः॥गुल्फ॥स्वानमः॥अङ्गुलीमूल॥
होनमः॥अग्र॥अङ्गुलिदहन्नामः॥ ॥ननमारुकोत्तामः॥
ॐ अस्मिन्नीमारुकोत्तामस्य॥वध्वअलिः॥ॐ बुद्धेः अपश्य॥
मिनसि॥ॐ गायत्री चन्दसंश॥मुख॥ॐ सनस्वतीमागुकाश्

वगायेनमः॥ नमः॥ ॐ ह्रीं श्रीं ज्ञानरागुक्ता ॥ ॐ स्वयं नमः॥ सकल
 नमः॥ पादौ ॥ ॐ अक्षयकीलकाय ॥ सर्व ॥ ॐ ममदहमद्वय ॥
 अपविनिथागः॥ नमः स्वानं ॥ ततः कना दन्ता सः ॥ ॐ अं कं जं भूं अं गु
 ष्ठायां ॥ ॐ हूं वूं लूं ती तूं नीयां स्वाहा ॥ ॐ उं टूं उं मध्यमायां वषट्
 ॥ ॐ नूं गूं जूं भूनामिकायां हुं ॥ ॐ अं प्रं उं कं निष्ठायां वोषट् ॥ ॐ यन
 लवक्षष सहस्रं जं अः कनकन पृष्ठायां भूमाय रुद्र ॥ ॐ वंदे दयादि ॥

ततो मातृका न्यासः सध्यानम् ॥ ॐ अक्षयपूरं हृन्मुखं सकललिपिमयि
 लालवक्त्रं त्रिभुवं ॥ शुक्लां कोनरुपां शशिमुखं उदंतां पयूकाप्र
 सन्नां ॥ पूरुषं कूर्पूकं मंवनमपिदधनीं शुक्लपद्मां वनाद्यां ॥ वारुण
 वीं पद्मवक्त्रं कुचवदनमितां चिन्तयत्साधकन्दः ॥ ॥ मातृकां न्या
 सः ॥ ॐ अं नमः ॥ कपालसः ॥ ॐ अं २ ॥ रत्नालसः ॥ ॐ हूं २ ॥ अवमिरवा ॥ ॐ
 हूं २ ॥ खवमिरवा ॥ ॐ उं २ ॥ अवक्रसपन ॥ ॐ उं २ ॥ खवक्रसपन ॥ ॐ

वर्ण ३

मं०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥
००॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥
नमः॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥
स॥ ॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥
वला॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥
॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥

नमः॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥
वला॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥
पवि०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥
ला॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥
पवि०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥
॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥ उ०॥

वाथा॥ॐ यं त्वगात्मनं शानूगला॥ॐ नं भूगगात्मनं शाजवह
 सूनी॥ॐ लं मासात्मनं ॥ ववूनि॥ॐ वं मदान्मनं ॥ खचहस
 नी॥ॐ ४ं भूषात्मनं ॥ नूगलं निस्पं ऊवला हारपचिठ्वा नां॥
 ॐ षं मऊात्मनं ॥ नूगलं निस्पं खवलागपचिंठ्वा त्वं॥ॐ सँभु
 कात्मनं ॥ नूगलं निस्पं ऊवगुनिपचिनवा त्वं॥ॐ हँ प्राहात्मनं
 नूगलं निस्पं खवगुनिपचिठ्वा त्वं॥ॐ लं जीवात्मनं ॥ नूगलं

निस्पृश्यं गुणं ॥ ॐ ॐ पनमात्मनः शानुगलं निस्पृश्यं गुणं ॥ ॐ नि
मातृका न्यासः ॥ ॥ गता मूलकृष्णादिकेन खदक्षि न्यासः पूर्वव
त् ॥ ॥ गता पीठ न्यासः ॥ ॐ मं मं मूकाय ॥ ॐ आधना ॥ ॐ कां काला नि
वृत्ताय ॥ स्वाभिस्थान ॥ ॐ कं कंकपाय ॥ नालो ॥ ॐ भूं आधनवधकथ
रा ॥ ॐ कूं कूं म्माय ॥ ॐ भूं जननाय ॥ ॐ पृं पृथिव्ये ॥ ॐ सिं सिंधूव
रा ॥ ॐ नं नलदीपाय ॥ ॐ कं कल्पवृक्षाय ॥ ॐ पां पादाय ॥ ॐ मं

मनिवदिकायेराॐ हं हं मपी मयरा हदयसा ॥ ॐ धं धं म्मो य २
॥ अवगल ॥ ॐ क्लं क्लानायरा ख वगल ॥ ॐ वे वे म्मो यरा अव खल
ॐ नं नं ध्यो यरा ख व खल ॥ ॐ अं अं ध्यो यरा खल ॥ ॐ अं अं
क्लानायरा नारि ॥ ॐ अं अं वे म्मो यरा अव वक् ॥ ॐ अं अं नं
ध्यो यरा नारि ॥ ॐ अं अं नननायरा ॐ पं पं विं विं गित्वा लक
पद्मायरा ॐ अं अं ननन्द कन्दायरा ॐ सं सं विन्ना लायरा ॐ विं
ख व वक् २

विकानमयक म्मो यरा ॐ पं पं क्कपात्मक पद्मायरा ॐ पं पं
अधर्गुवी आद्य कर्तुकायरा ॐ अं अं म्मो यरा कं रं नं पिन्ना
दिदादकलात्मनं ॥ ॐ उं उं चन्द्र मधुलाय अमृतादिषा ॐ
कलात्मनं ॥ ॐ नं अग्नि मधुलाय यधूमादिषा ॐ
नं ॥ ॐ सं सत्वायरा ॐ नं नं अगुनायरा ॐ गं गं भागुधायरा
ॐ अं अं आत्मनं ॥ ॐ उं उं अं नननात्मनं ॥ ॐ पं पं नमात्मनं ॥ ॐ

श्रीं ज्ञानात्मनः ॥ ॐ मां मायातत्वाय ॥ ॐ कंकलातत्वाय ॥ ॐ विं वि
 धातत्वाय ॥ ॐ पंचमगतत्वाय ॥ ॥ ॐ विमलाय ॥ ॐ कर्षिह
 ॥ ॐ कूनाय ॥ ॐ क्रियाय ॥ ॐ आगत्येनमः ॥ ॐ लिधायेन
 मः ॥ ॐ प्रदनेनमः ॥ ॐ सत्प्रायेनमः ॥ ॥ ॐ अष्टकैनेनमः
 ॥ ॐ श्रीं सर्वगं किं कमनासनाय ॥ ॐ गीपी ॥ न्यासः ॥ ॥ मूल
 षं गन्पासः ॥ मूलं नवापकं न्यासः ॥ ॥ एवं दहमथपी ॥ ॐ चिक
 नूगलसः ॥ २

यदि हृदयगतान् ॥ मनसा पाद्यादिचन्दनादिनिवदयित्वा शिवसिम्ह
 व्या ॐ ॥ लिं दद्यात् ॥ मनसा ॥ मूद्रादर्थयत् ॥ ॥ प्राणायामः ॥ श्रीं ॥ ॐ ॥ श्रीं ॥
 श्रीं ॥ ॥ ॐ निजेन योः ॥ ॥ गतावहिर्योगं कुर्यात् ॥ गतं सर्वं सुख
 पनं ॥ पूजा ॥ वामदक्षमौ मणुलं लिखित्वा पूजनं ॥ ॐ श्रीं ॥ आधाय भक्त
 दिव्या ॥ मंचि सत् ॥ रुद्र ॥ मणुलं मंचि ॥ पूजा ॥ ॐ नवदिमणु
 लाय ॥ संखभिल ॥ रुद्र ॥ मंचि सत् ॥ पूजा ॥ ॐ हं ॥ अर्कं मणुलाय ॥

लेखना ॐ श्रीं वनू धादव्ये रा ॐ धकं वत खानन ॥ अङ्कत उषधी
न ॥ पूजा ॥ ॐ संता मम गुलाय ॥ अङ्कम मूद्रान नीर्था वाहनं ॥ ॐ श्रीं
क्रों गं रावति मन्त्रन ॥ मत्स्य मूद्रान (आधनं) ॥ ॐ १० ॥ धनू मूद्रा ॥ क्रों
वदयादि प्रउं रगन पूजा ॥ श्रीं वन्दना उरग पूष्यं ॥ ॐ ख मूद्रा गाल
त्रय दीग्वन्धनं ॥ ततः ॐ ख उल न सर्व सिंचयेत् ॥ गायत्री ॥ ॐ श्रीं व
ला मूर्वी विद्महः सर्व दूष्टानां रुक्मिणी धीमहि ॥ तन्ना दवी प्रचोद

यात् ॥ ॐ श्रीं ख रूपनं ॥ ॥ तगा पूजा पवन णादि (आधनं) ॥ श्रीं प्रद
ॐ स्का नयथ विधानन ॥ ततः नैव श्र (आधनं) ॥ जल न प्राकु ॥ रु
द्र ॥ ॐ वन्दना उरग पूष्यं ॥ (आधनं) ॥ र्य ३ नं ३ वं ३ मूलं ३ ॥ धनू
यानि मूद्रा ॥ गाल ग्रय दिग्वन्धनं ॥ ॥ श्रीं पाय रूपनं ॥ विन्दु वि
काण वृत्त चरुन मु विलिखित्वा पूजयेत् ॥ ॐ श्रीं आधन ऋक्
दिद्या ॥ रुद्रा मं चि सित ॥ ॐ नै वक्रि मं गुलाय दध कला मं

न२॥ पागुसलः रुट् ॥ मंचिस्तंगा ॥ ॐ ह्रीं वंगलादव्या पागुसना
 य२॥ मूलं वंगलादव्या पागुस्थायामि२॥ त्रिको ~~ल~~ ल्हाय ॥ ॐ
 ह्रीं कलाये२॥ ॐ नंवक्रिमं गुलाधुमा चिखादिदक्षकलात्मन२
 ॥ ॐ ह्रीं भू सूर्य मं गुलाय दक्षकलात्मन२॥ ॐ ह्रीं वंगला
 पागुये२॥ ह्रीं ॐ ह्रीं जलचनय हूं फट् स्वाहा ॥ पांचजन्या य२
 ॥ पूजा ॥ पावधनं श्री कलसं न धनं ॥ मूलं वंगला मूर्खीदव्या इव्यं पू

३ पंचवीजगा ॥ ॐ हूं हूं हूं हूं हूं पंचनस्तथा ॥ त्रिकूट पूजा न त्रिको
 नय२ स्वाहा ॥ ह्रीं वक्राडस्वरं गुतिगा गतपूजनं ॥ ॐ ह्रीं दक्षकला
 त्मन सूर्य मं गुलाय२॥ ॐ ह्रीं संमा मं गुलाय प्रोक्तं स कलात्मन
 दव्या मृताय२ ॥ सुनिमूद्रि ॥ ॐ क्रो गंगवति ॥ षड् ~~ल~~ पूजा ॥ मू
 लं न ~~ल~~ धनं ॥ चन्दनादि ॥ ॐ चन्दना उगपूष्यं२॥ ~~ल~~ वं ॥ स
 था निमूद्रा ॥ हूं भूवगुं नं ॥ रुट् तालवयदिग्वन्धनं ॥ ॐ ति पा
 वस्थापनं ॥ ॥ गता भक्तिमात्रं रागपाव गुनपावनित्यवदं ॥ ॥
 ६ ॥ हूं हूं हूं हूं हूं

गंगाधरार्कयोगः॥ धवनगलसः मननं पूजाय पंचापचान्नं नि
याहुर्लिने मूलं वगलामुत्तिद्वयं ॥ ॐ निस्तयोगः ॥ ॥ गंगाधर
सपूजा ॥ ॐ स्वाध्यायं तं स्वनहाय ॥ ॐ श्रीं आत्मनः सिंचनं ॥ ॐ
चन्दनं पुष्पं ॥ ॐ सिनसमूलनगयां जलि ॥ ॐ श्रीं वगला ॥ आ
त्मनः पापू ॥ ३ ॥ ॐ सिनसगुनगर्भा ॥ ॐ गुनपादकक्षपादकां न च
मि ॥ ॥ गंगाधरसपूजा ॥ ॥ धनमालनी पठप ॥ धूपधन ॥ ॥

आदौ विष्णुवलि ॥ ॐ हगयसर्वविष्णुगमयानलिंगद्रुखाहा
॥ ॥ पंचवलि ॥ ॐ ननासनाय ॥ ॐ ओं श्रीं श्रीं ह्रीं कः ॐ यपाला
यवलिङ्गद्रुखाहा ॥ ॐ मयूनासनाय ॥ ॐ वां वी वू वः श्रीं वदकाय
वलिङ्गद्रुखाहा ॥ ॐ सिंहसनासनाय ॥ ॐ यां सर्वयोगिनीया
वलिङ्गद्रुखाहा ॥ ॐ प्रनासनाय ॥ ॐ श्रीं सिद्धिचामुख्ये वलिङ्ग
द्रुखाहा ॥ ॐ मूपासनाय पापू ॥ ॐ गंगी गूंगः लिंगमपगतयेव

लिंगरूपाहा॥ दधुगर्जनीः यानिः काशः गजमुद्रा॥ चन्द्रनादि
मनेवञ्चक्राय॥ ॐ प्रीतिप्रसति॥ ॥ गुरुपात्रगुरुगर्भेनः शग
पात्रपत्रिवात्रगर्भेनः श्रीमूलजालः मूलगर्भेन॥ ॥ गाम्बूला
दिरभाधनं॥ ॥ धनद्वयमिदं दधुगर्भेन विविश॥ ॥ गाम्बूला
गर्भेन विविश॥ ॥ देवभावाहनं॥ श्रीसम्बर्धो॥ मूलगर्भेन विविश॥
विवलि॥ त्रैलोक्यसनाय॥ ॐ गुरुपात्राय॥ वलि॥ ॐ मयूना

सनायपात्रा॥ ॐ वाँवटुकाय॥ वलि॥ ॐ मूपासनाय॥ ॐ ग
गर्भपत्राय॥ वलि॥ दधुगर्जनीः गजमुद्रा॥ चन्द्रनादिन॥ गर्भेन
॥ ॥ गतागुनूपकिञ्चुजा॥ ॐ गुरुपात्राय॥ त्रैलोक्यपत्रमगुनूपव॥ त्रै
वंः पत्रापत्रः पत्रमश्रीः सिद्धीचः दिव्योचः मानवोद्य॥ वलि
॥ ॥ गतापी० पूजा॥ ॥ ॐ मगुकाय॥
ॐ कोलागिनूद्राय॥ ॐ ककुपाय॥ ॐ आधिव॥ ॐ कथ

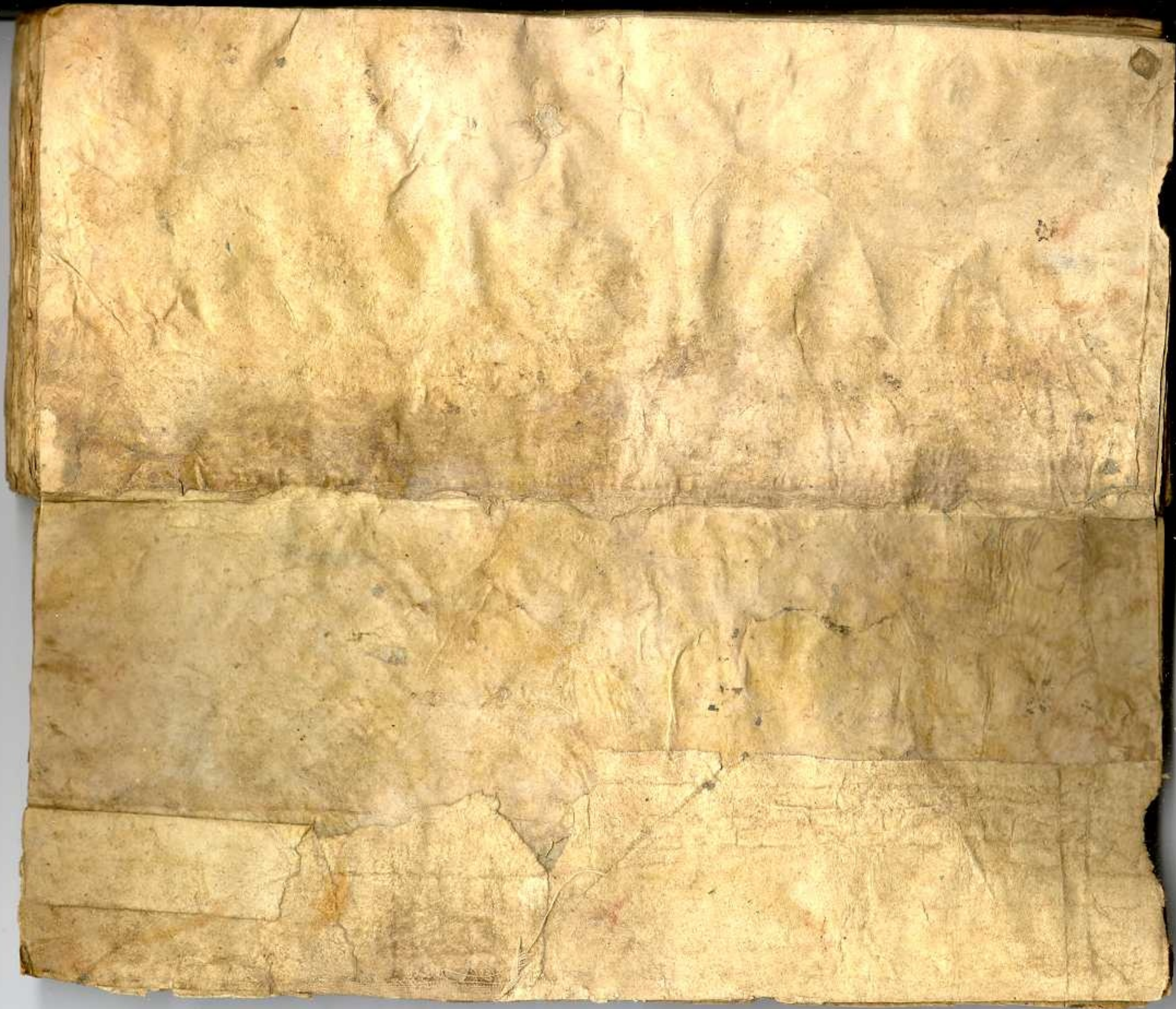
लायरा॥ ॐ विकानमयकठनायरा॥ ॐ प्रकृतात्मकपराय
रा॥ ॐ पञ्चशब्दधर्मुवीआशुकर्णिकायरा॥ ॐ ॐ सूर्यमधु
लायकंरंगपित्तादिद्वादशकलात्मनरा॥ ॐ ॐ चन्द्रमणु
लायअमृतादिषाडशकलात्मनरा॥ ॐ नॐ अग्निमणुलाय
यंधूमार्चिषादिदशकलात्मनरा॥ ॐ सॐ सत्वायरा॥ ॐ नॐ
आगुनायरा॥ ॐ नॐ मागुहायरा॥ ॐ ॐ आत्मनरा॥ ॐ ॐ अन

कनात्मनः॥ॐ पं पन मात्मनः॥ॐ श्रीं कानात्मनः॥ॐ मायाग
त्वायः॥ॐ कलागत्वायः॥ॐ विशगत्वायः॥ॐ पनग
त्वायः॥ ॥पी॥ॐ किपूजा॥ॐ विमलायः॥ॐ कप्रिष्टे
ॐ कानायेनमः॥ॐ क्रियायेनमः॥ॐ आगयेनमः॥ॐ लि
धयेनमः॥ॐ प्रदनेनमः॥ॐ सप्रायेनमः॥ ॥ॐ भूयः
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ श्रीं सर्वेष्टकि कमलासनायः॥ ॥ॐ श्रीं स्वर्गुसिंहासनास
पायः॥ॐ श्रीं पद्मासनायपायः॥ ॥धनप्राणायामन्यासः॥ ॥
ध्यानं॥ॐ श्रीं गम्हीनाश्वरमदानमः॥ गफकाश्चनसन्नितोचगुरु
आलिगयनाकमलासनसंस्तितां॥मुद्रनंदजिह्वापाठं॥वा
भजिह्वाचवक्त्रं॥पीमास्वनधनासाद्वृत्तपीनपथाधना
॥हमकुलभूषाश्च॥स्वर्गसिंहासनसंस्तितां॥ध्यानपूष्यपा

पू॥ ॥ॐ महापद्मवनान्तस्तुति॥ ॐ दधनिरुकि सुनरुति॥
 रुगापुरलि॥ ॥ आवाहनं ॥ मूलं एगवती वगला मुखी दद्यात्
 हागच्छ २०० तिष्ठ २०० हस्तनिहिता एव २ भूयाधिष्ठानं कनूर
 मम पूजां गृह्णत ॥ ॥ पूर्ववगुप्रागप्रतिष्ठा ॥ मूलनक्षत्रधनं ॥
 दध्यास्तु ॥ अथ अन्नासः ॥ ॥ स्वागतप्रसन्नं ॥ ॐ श्रीवगला मुखी
 दद्यात् स्वागतकृष्णमिदमास्यताम् ॥ ॥ गता उपवातं ॥ ॐ श्रीवग

लामुखीदेवी १०० दमासनं २॥ ॥ ॐ श्रीवगला मुखीदेवी पाशं २॥ न
 वं ॥ अर्घ्यं ॥ चामतः पुन ऊलस्तानं ॥ आवसनं ॥ वस्त्रं ॥ ॐ श्रीश्रीव
 गलामुखीदेवी वन्दनं ॥ एव ॥ अर्घ्यं ॥ सिन्दूरं ॥ गन्धचनः पीत
 अशीपवीतः पीतपुष्पः वस्त्रालंकारं च धूपदीपः ॥ रुतः पक्षा
 न्नग ॥ ॥ नैव श्रद्धाधनं ॥ यं ३ नै ३ वं ३ मूलं ॥ १ धनूः गालप्रथका
 निका ॥ नैव श्रद्धा ॥ ॐ श्रीवगलामुखीदेवी नैव श्रद्धा निव दद्यामि २



ASHA ARCHIVES

3388

प्राणाहुति॥ ॥ धनदकापदार्थउपचानन॥ तर्प्यर्षी॥ मूलं अमूकं सु
मुखपादुकातर्प्ययामि॥ ३॥ पुननाचमनम्॥ ॥ गयो अत्र लि॥ ॐ
क्षीं वगलामुखी सर्वदृष्टानां वाचं मुखं सुमुख्यजिह्वाकीलयवु
द्धिं विनासयक्षीं ॐ स्वाहा॥ श्रीमन्महापीताम्यनावगलामुखी स
रसुमिनी श्रीपापू॥ ३॥ एवं वलिमूत्रा॥ विन्दुतयंददत्त॥ पवि
वानपूजा॥ ॐ क्षीं वगलामुखी देवी पविवावास्तु पूजयामि आरु

दहिउमस्वा ॥ गंगा मूलखंडरानपूजा ॥ ॐ हृदयाय नमः ॥
गलामुखी शिनस स्वाहा पू॥ सर्वदुष्टानां शिखा येव षट्पा पू॥
वाचं मुखं पदं सुमुख्य कवचाय पू॥ उक्तां कीलयनं गुण्या
यवी षट्पा पू॥ बुद्धि विना सय अमुनाय रुट्पा पू॥ ॐ गिषठं गा॥
तगा अमुपुपंग पूजा ॥ ॐ श्रीं शिखि सुपा पू॥ ॐ श्रीं कपालखा
पा पू॥ ॐ श्रीं लोचनखा पा पू॥ ॐ श्रीं कर्णखा पा पू॥ ॐ श्रीं नासाखा

पा पू॥ ॐ श्रीं मुखखा पा पू॥ ॐ श्रीं विवुक्खा पा पू॥ ॐ श्रीं गलखा
पा पू॥ ॐ श्रीं हृदयाय पा पू॥ ॐ श्रीं ----- ॐ श्रीं वाङ्मयां पा
पू॥ ॐ श्रीं हस्तायां पा पू॥ ॐ श्रीं नासायां पा पू॥ ॐ श्रीं अवायां पा पू॥ ॐ श्रीं
पृष्ठपा पू॥ ॐ श्रीं रगपा पू॥ ॐ श्रीं उरुयां पा पू॥ ॐ श्रीं जानूयां पा पू॥
ॐ श्रीं गुल्फायां पा पू॥ ॐ श्रीं पादोपा पू॥ ॐ श्रीं सर्वभूतगत्य पा पू॥ ॥
नमः अमुपूजा ॥ ॐ श्रीं --- मुक्तनाय पा पू॥ ॐ श्रीं कृपाभाय पा पू॥

ॐ श्रीं वक्राय पापू॥ ॐ श्रीं मृगमुखस्थाय पापू॥ ॥ तत
 पत्रिवानपूजा॥ वरुणाय पापू॥ ॐ श्रीं गंगाय पापू॥ ॐ श्रीं
 वृं वक्राय पापू॥ ॐ श्रीं यां योगिनीया २॥ ॐ श्रीं जं कुप्रालाय पा
 पू॥ सुवामरगभीक्ष्णादिने जन्मनम्या ॐ श्रीं वं गुन्या पापू॥
 ॐ श्रीं वं पनापनगुरुया २॥ ॐ श्रीं वं अस्मत्तगुन्या पापू॥ ॥ न
 तषोदधदला॥ ॐ श्रीं मं मंगलाय पापू॥ ॐ श्रीं सुमित्रे पापू॥ ॐ

श्रीं ॐ जमिने पापू॥ ॐ श्रीं मम्माहिने पापू॥ ॐ श्रीं वं वगल्यये पा
 पू॥ ॐ श्रीं अं अचलाय पापू॥ ॐ श्रीं वं चलाय पापू॥ ॐ श्रीं उर्ध्वार्
 य पापू॥ ॐ श्रीं कैकल्यय पापू॥ ॐ श्रीं धीराय पापू॥ ॐ श्रीं कल्य
 नाय पापू॥ ॐ श्रीं कालकर्षिणे २॥ ॐ श्रीं आमिकाय पापू॥ ॐ श्रीं
 मंदगमनाय पापू॥ ॐ श्रीं भोगाख्याय पापू॥ ॐ श्रीं यागाय पापू॥
 ॥ ॥ ॐ श्रीं वक्राक्षे स्वाहनायुध सहितया पापू॥ तथैव मा

ॐ ह्रीं हां हा कि न्ये २॥ २

हृषीकोमानि वेधूवी वानाही रून्दायती चामूढु महाल
मीयादि अरुलपू॥ मका धो॥ ॐ ह्रीं डां डा कि न्ये २॥ ॐ ह्रीं नां
ना कि न्ये पापू॥ ॐ ह्रीं लां ला कि न्ये पापू॥ ॐ ह्रीं कां का कि न्ये पा
पू॥ ॐ ह्रीं सां सा कि न्ये पापू॥ ॥ गि कार धा ॥ ॐ नं न आ गु ल य पापू
ॐ ह्रीं

ॐ ह्रीं लां रून्दाय पापू॥ ॐ ह्रीं नां नून य पा ॐ ह्रीं मां य माय पापू

ॐ ह्रीं आं मे स ग य पापू॥ ॐ ह्रीं वां व नू ल य पापू॥ ॐ ह्रीं यां वा य व
पापू॥ ॐ ह्रीं सां कू व ना य पापू॥ ॐ ह्रीं हां ह्रीं ठा ना य पापू॥ ॐ ह्रीं
भू न का य पापू॥ ॐ ह्रीं उं व क र ल पापू॥ २॥ अं अ धा य पापू॥ २॥ उं
उ ह्यो य पापू॥ त र्ज्ये न व लि ॥ ॥ ॐ ह्रीं वं व द्रा य पापू॥ २॥ र्ज्ये
क्त य पापू॥ २॥ दं द ल य २॥ रं र व द्रा य २॥ पं पा षा य २॥ अं ध जा
य २॥ गं ग डाय २॥ र्ज्ये वि भू ला य २॥ सं व द्रा य २॥ रं क म ल ॥ ॥

सर्वशक्तिदत्ता ॥ ॐ ॐ ह्रीं क्लालये पापू ॥ ॥ तना वित्तपूजा ॥
मूलं वगला मुखी एतान् कारये पापू ॥ ३ ॥ वलि ॥ ॥ भयभीता
पचा अलि ॥ ॐ ह्रीं वगला मुखी विद्महे सर्वदुष्टानां वाचं मुखं
पदं सुमुख्यधीमहि ॥ जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय तन्ना प्रथ
दयात् ॥ वलि ॥ ॥ पुनः दत्ता जलि भयभीता ॥ ॐ ह्रीं वगला मुखी
विद्महे सर्वदुष्टानां सुमिहं धीमहि ॥ गन्ता दवी प्रथो दयात् ॥ वे

लिम्बुदा॥ ॥ पून गायत्री॥ ॐ वक्रास्तुये विद्मह सुतुनाये धीम
हि॥ गन्नावगल प्रवादयात्॥ वलि॥ ॥ स्वमूलपूजा॥ धसाला
कलशः सखानः मोहनीः कुम्भस्वस्वमस्तु नपूजावलिम्बुदा
॥ ॥ होमयायधनः वलिमविष्टयाय॥ मयाग सामुच्चात्॥
गभावलिप्रदानं॥ ॐ ह्रीं ओं ऊँ कूं उः ह्रीं ऊग्रपालायवलिंगद्वार
स्वाहा॥ ॐ ह्रीं वाँ वीं वूँ वः वूँ बदकेनाथायवलिंगद्वार स्वाहा॥

ॐ क्लीं यां सर्वथा गिनीयावलि गृह्ण रत्नाहा ॥ ॐ क्लीं कुरु सिद्धिवा
मूर्ध्नि ये वलि गृह्ण रत्नाहा ॥ ॐ क्लीं मंगी गूंगः ग्लो ग १० न पत
य वलि गृह्ण रत्नाहा ॥ ॥ मूल वलि ॥ मूलं वगला मूर्खी दव्ये ॐ
मां पुष्प धूप दीपन वशादि सर्वा पचा नं वलि गृह्ण रत्नाहा ॥ भू भुवः स्व
मृ य र जिष्वा कीलय र बुद्धिना भय र ना भय र ना भय र ना
मय र गृह्ण रत्नाहा ॥ वगला दव्ये न प वलिन मः स्वाहा ॥ समस्त वलि ॥

ॐ क्लीं वगला मूर्खी दव्ये मां सायुधाः सवाहनाः सानुचनयः सर्वभ्यो
दव्ये चक्र स्थि ग र्था ॐ मां पूजा वलि गृह्ण रत्नाहा ॥ ॥ विशेष मा
लकी वलि ॥ महा वलि ॥ रुट सा ॥ मरुत सात्वा क वलि विय ॥ ॥ चक्र
नादि स्वमर्तु ध ददत् ॥ नैव भर्तु धर्तु चक्रत्वा प्रनिष्ठा कान यत् ॥ ॥
ॐ क्लीं या वत्सव नि ॥ ॥ अप ॥ उप समर्प्य भूमा ॥ ॐ क्लीं गुक्ता निगु
क्ता गुफ नि ॥ ॥ मरुत सा ॥ ॐ क्लीं भू खर डे नि ॥ ॥ कुरु भू वटुक

गि॥ ॐ श्रीं चतुर्कमललोचनमि॥ सातु सगनाम सहस्रनाम कवच
दयः ॥ ॐ श्रीं यथा॥ विरेम मातुका सातु॥ माहा माया संवत्सरे ॥ अ
पनाधेति॥ आवाहनं न जानेति॥ अगुगं धीमि॥ ॥ पञ्च योगं कारय
तु॥ वुकसां संने वं निवदयतु॥ गण्यं न च॥ कोमानी याग॥ द
कि॥ ॥ गगः ॥ भक्ति पूजा पाद्यादिना स्वस्वादिन मनुज वा पूज्य पु
ष्पाञ्जलिः मूलं भक्ति पापू॥ ॥ कलशादिवि सर्जनं॥ ॐ श्रीं यथा

भक्ति पूजिता सिद्धमस्व॥ दवाः सर्वं कलशोदकना रिषकं का
नयतु॥ ॐ उकात्रो वृषपादाहति॥ ६॥ ॥ कुम्भ वि सर्जनं॥ ॐ
श्रीं कुलकुम्भं यथा भक्ति पूजिता सिद्धमस्व॥ सर्वजनैः द
सेनं॥ ॐ सम्वत्सरे॥ सक्ता ये दयतु॥ ॐ श्रीं गङ्गीति॥ भक्ति हस्त
॥ ॐ वरुणो नाथ गि॥ भक्ति नागुन मूलं गण्यं यित्वा दयं निवदयतु
॥ ॥ गगः समय चक्रं कानयतु॥ ॥ कुम्भ मन्त्रेन गुन पात्र दत्वा

गुनप्रगम्य बुद्धिस्तद्गुनवनिवदयत् ॥ तत्त्वेन लग्नपात्रगतर्पेन कृ
 त्वा तत्पानिजिपत् ॥ किंचित्सर्वजनाय ददत् ॥ अकिपात्र अक्षौ दद
 त् ॥ वीनपात्र स्वार्थे मानीय ॥ साधकस्तु कुम्हामृतनपात्र निधाय
 साधकस्या ददत् पात्रवन्धनं ॥ गर्भे ॥ प्रीतीप्रतति ॥ ॥ खेचना
 दि ॥ श्रीमद्देवनि ॥ आचमनं ॥ न्यासलिकाया ॥ अस्तु ॥ वलि
 विसर्जनं हस्तिकांजिप्य ॥ ॥ दग्धं ॥ लिख्यवल्पादिनिर्मा

त्यपात्रनिधाय गमिन्पूजयत् ॥ ऐं ह्रीं श्रीं उच्चिष्टं भैरवस्ये हि
 वलिंगं द्वा ॥ ह्रीं सुमुखी देव्यै वलिंगं द्वा ॥ ॥ पञ्चमू
 णु विसर्जनं सर्वगिलकं कानयत् ॥ मालसासानिस्तव ॥ ॥
 ॐ ह्रीं वकानकनि ॥ मणुलदवपुष्पद्वयनं ॥ ॐ ह्रीं अवेपूर्व
 नि ॥ साधकस्यायुष्मं ददत् ॥ ॥ ततश्चिपात्रामृतं यन्मुपनिशाम्य
 किंचित्पूजयत् ददत् ॥ मूलं रुषपरांगमूर्खार्थं श्रीवगलामुखीद

वीत्वाह॥ ॥ देवविस्तर्जनं॥ ॐ ह्रीं गं छ गं छे गि॥ आवाहने गि॥
 ॐ ह्रीं वं गला मूर्खी देवी यथा भक्ति पूजिता सिद्धि मन्त्र॥ यन्तुं च
 नयत्॥ अक्षराना लग्नं संहन मूढान स्वान कीया वड् अन्न
 य॥ पूजनं॥ ॐ ह्रीं निम्नो ल्पवा सिन्धो पाप॥ ॥ श्री पाशा मृत नन च
 र्ण॥ आत्मानं पनमध्वनी ध्यात्वा॥ आत्मनत्वा दिगि न स्थन प्राप्तनं॥ पा
 त्र सरणि लेन का वध मन्त्र पद पा व्रण क पूर्य॥ नैरु पा ला दि दिवा

यागिन्प्रमृष्यन्तु ३॥ यं यं स्मृभनिपादनि ॥ ॥ पात्रं ब्रूयामूखीकृत्य ॥
 श्रीं कान्तिलिख्य ॥ निलकं कान्तयन् ॥ हस्तो प्रस्थाप्याचम्य ॥ ॥ चतुर्भुजं कदं वि
 धत् ॥ गंगं प्रक्षतं नि ॥ सूर्यं साजि ॥ वाक्प ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं सः कृतकर्म
 साजि रणमार्गं शुभेन वायुं श्रीं प्रकाशं किं सहिगायन् दमर्च्यं
 गृह्य ॥ १०॥ पूषं २॥ ॥ ॐ निधीव गलामूर्खीः स्वल्पपूजापद्धति
 समाप्तम् ॥ ॥ शुभम् ॥ श्रीस्वस्त्यस्तु नमः ॥ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

अथवावाद्याकीनंनिधाय

श्रीवगलादयोः॥ ॥ आद्योवाचमनंप्राणायाममूलन्यासः॥ ॥ रु
मोपीतवृक्षगणिकागवृक्षवृक्षसुंविनिख्या॥ पूजयता॥ ॐ श्रीं श्रीं
आधनक्षकूदित्याः॥ गदुपनिषतासनंनिधाय॥ पूजा॥ ॐ शिवा
रूपायसर्वसिद्धिसाधनायपापू॥ ॥ ॐ मनू पृष्ठः सः सः सः सः
कृत्यः श्रीकृष्णोदवताआसनापवसनंविनिधायः॥ स्पर्श॥ ॐ श्रीं
पृथ्वीत्वयाधृतालीकादवीत्वंविष्णुनाधृता॥ त्वं वधनयसांभ

मालकोसकतांताललायक॥ इवसाधनंकर्यागू॥

अपविशंकुनूचासनं॥ पूजा॥ श्रीं आधनक्षकिष्कमलासनाय॥
सर्वधौ आशांप्रार्थयत॥ सिद्धिवीनासनंवापविष्णु॥ इति आ
सनस्थापनं॥ ५॥ गतः पीतवृक्षगणिकागवृक्षसुंविनिख्या॥ गतः
गीतिप्रसिगसांनिगदूनंनिधायपुष्पंच॥ गतः मृदिकादिपी
मूलनिर्मितगिकागकानदीपराशुसत्त्वानंप्रख्याल्य॥ ॐ श्रीं वृ

अथवावाद्याकीनं

रुद्र

पूजाविधिः॥ ॥नगदीपार्चनं॥स्थानिपूजाविरक्षणनदीपार्च
नकुर्षीत्॥ ॥निर्घाणःकलशःकुम्भःसुगन्धमाहनीदूसात्रा
थनपूजा॥वलिमुल॥चन्दनादिःधूपःदीपःनेवशादी॥प्रति
ष्ठा॥उपसंकल्पयथाशक्ति॥ ॥उप॥सायादिरुक्॥अकल्प
त्वलिदानं॥थननेमिद्रिकपूजाविरक्षणधूनक॥आचार्य
पूजा॥दक्षिण॥ ॥यजमानाक्षीर्वाद॥समयान्तं॥दवविमर्ज

यत्॥वाक्प२०॥सूर्यसाक्षि॥उमामुनियथाशला॥इति॥ ॥

ॐ नमो भगवते ॥ ॥ अथ ह्यमविधिः ॥ रगमयनवरथलावणि
की ॥ कान्तं अग्नि कुलुदने ॥ ध्वकुलु सरगमयनथलावपीत
वृक्षेन वाय ॥ ॥ गुतिला हात सिनाव आसन सधान ॥ गिरत्वं
नावमने ३ ॥ हूर्यार्थ ॥ क्रौं क्रौं सः श्री हूर्यार्थ स्वाहा ॥ पूषं २ ॥
तमी गुन पूजा ॥ गणी गून् मूलनमस्कान ॥ हत भूदि प्राण प्र
निष्ठा ॥ मूल कन प्रठ जन्मासः ॥ माह न्यासः ॥ गत्वं न्यासः ॥

प्राध्यायः ॥ ॥ गतः कृष्ण सस्कानं ॥ मूल मनुष्य साय ॥ वु
द्धि विना सय अस्माय रुट् ॥ जलन प्राकृतं ॥ बुद्धि विना अ
य अस्माय रुट् ॥ गय ॥ बुद्धि विना सय अस्माय रुट् ॥ वाथ
याव वाय ॥ ॐ क्रौं हृदयाय नमः ॥ रिदवान धन ॥ बुद्धि वि
ना अय अस्माय रुट् ॥ माधन वनक ॥ जिह्वा कीलय ववाय रु
स्वनायाय ॥ बुद्धि विना सय अस्माय रुट् ॥ गय ॥ जिह्वा कीलयक

वचायद्वा॥ वपुष्य॥ ॥ गमय न चरथ त्वा॥ कालान्नृपं कल्पय गा॥ ॐ श्रीं ह
दयाय नमः॥ पूजायाय॥ ॐ वृद्धिं विनाशाय अमृताय रुद्र॥ वक्षी
कनकायाय॥ ॥ पूर्ववत्तु नववा नवावकाव कूष भ पूत॥
ॐ श्रीं हदयाय नमः॥ उपलपा॥ कुशनवगुण दत्तय॥ अऊ
पागताय वलं खनहाय॥ ॐ वृद्धिं विनाशाय अमृताय रुद्र॥ ॥ ॐ
कालनलं खनहाय॥ ॥ ॐ वृद्धिं विनाशाय अमृताय रुद्र॥ कूष

नदाय॥ ॥ पिवदिगर्भं कूषगया॥ कुक्षुयादधुसः पिका लः पक्षा
लः चाकः केशनः॥ अक्षदल पद्मः पका लः दानः पण्यं॥ दधुस
थीयद्वा॥ ॐ कानक्षलं खनहाय॥ ॥ तगाखनक्षत्रीयापी॥ पू
जायाय॥ ॐ आधात्र भक्तये नमः॥ ॐ अनन्ताय नमः॥ ॐ स्कन्दाय
नमः॥ ॐ नालाय नमः॥ ॐ पद्माय नमः॥ ॐ पद्माय २॥ ॐ केशवस्था
नमः॥ ॐ कर्णिकाय नमः॥ ॥ तगापी॥ ॐ किपूजा॥ ॐ अयाय नमः

ॐ विष्णुयार्थे नमः ॥ ॐ अजिगार्थे नमः ॥ ॐ अपनाजिगार्थे नमः ॥ ॐ दा
श्वी २ ॥ ॐ अध्यात्राय २ ॥ ॐ मंगलाय २ ॥ ॐ वागीष्ठी ध्वन आयोग
पी भक्तन नमः ॥ ॐ आदियानावपी ॥ पूजायाय ॥ ॥ वागीष्ठी नी
या ध्यानयाय ॥ ॐ ॐ वागीनी मृगुस्तानां नीलदीवन सन्निहं ॥
वागीष्ठी न संयुक्ता मूपचारः पूर्वदक्षिणिः ॥ संपूज्य कुरुवा २ ॥
व्याः ॥ नीन मिगिरावया ॥ ध्यान पूष्पापा ॥ ॥ हामसिलं खनहा

या ॥ ॐ वृद्धिं विनाशाय अमुत्राय २ ॥ हामसिंतना ॥ ॐ ॐ ददयाय
नमः ॥ पायादि ॥ यत सिध्द न पूजा ॥ ॐ ॐ नमः ॥ सिंतकायावम
वाय ॥ भकायाव उभय ॥ लीनाववी ॥ मलं खनहाय ॥ ॐ ॐ ॐ
कीलन प्रतुयाय वीषट् ॥ लं खनहाय ॥ ॐ वृद्धिं विनाशाय अमुत्रा
य २ ॥ अरिपन ॥ ॐ वाचं मुखं प्रदं स्रुय कवचाय ॐ ॥ ग
उनं पाय ॥ ॐ वृद्धिं विनाशाय अमुत्राय २ ॥ लं खनहाय ॥ आकावा ॥

नमो भद्रं जनि चाना वगथा जग्नि नं मन्त्रं शत्रु क ल्याय ॥ ८४ ॥
धनं ॐ ५० ॥ ८५ ॥ धनं मुद्रा वं ॥ ॐ वृद्धिं विना सन जग्नि य रुद्र ॥ गाल ग
या ॥ ॐ वाचं मुखं यदं स मुय कवचा यद्रु ॥ अरु गुणं ॥ पूजयेत्
धमिकाय ॥ ॐ कान्त ॥ कुणु सावा कल हाय क ॥ न पापु तिनं वं
वा या व ॥ धनं दार ॥ ८६ ॥ व कं ॥ अग्नि स्थापन याय ॥ वागी ध्वन वागी
ध्वनी न वं सं रा ग शत्रु ल पात्र ॥ अग्नि स्थाप या था ॥ ॐ वि सि

गन हन रध र सर्व स्थाप य स्वाहा ॥ दाय ॥ ॐ दामू दं र्ध थ ग
नम स्त्वा नं ॥ ॐ अग्निं प्र दालि तं वन्द ॥ आत व दं दू रा सनं ॥ सूव र्धु व
र्धु म म लं ॥ समू द वि श्व ना मुखं ॥ ॐ निष्ठ ग ॥ ग ना न्न ष्या दि न्या सः ॥
ॐ वे द न न आ ग व दः ॥ ॐ हा व ह नो हि ता र व्प सर्व क र्म सा ध य त्वा
हा ॥ मूल थ ॥ ॐ र गु ष्ठा य ॥ ॐ नि न मि ॥ ॐ गाय त्री कृ न्द स ॥ म
ख ॥ ॐ नं वी जा य ॥ ॐ स्वा हा ष क य ॥ ॐ की ल का य ॥

धर्मोर्थकाममार्गार्थउपविनिथागः॥ कृष्णशुक्लि॥ ॐ
 अकिस्वसि कारीणि मूर्ध्नी दीधे दार्गमनयन उवाहं॥ हिमाके
 लंपदमसक्तं विनगुंधाय दक्षिणवद्वर्मा लिङ्ग उवाहः॥ धर्मगंधानया
 नावलं खनहाय॥ अगरे कृष्णकाया व्रमखलासतयः॥ सिंकाया
 वसाखे सगयः पूर्वसमगवः दक्षिणं निस्पंदाय कावपूजायाय॥
 ॐ वृक्ष २॥ ॐ नृपाय २॥ धनि पूजायाय॥ आश्विनादिः धम
 अवेष्टव २॥ १

नः आवाहन॥ पाशादि॥ चनौदि॥ गियाशुक्लि॥ ॥ प्राकसिंकुहाक
 लाहसिः पिलागसिः व्यालसिः धम्यसक्तता॥ धर्ममखलासपूजा
 याय॥ ॥ प्रक्षालदधमसवक्रिमक्तनपूजा॥ नं अग्नय २॥ प्रक्षाल
 सः जिष्ठाः घाला॥ नूचि॥ कथनसः प्रजजनपूजा॥ अष्टदलसः अ
 ष्टमूर्तिपूजायाय॥ धनपिः ॐ नृपादिलाकपालपूजा॥ धनपिनः ॐ
 मादिपूजा॥ ॥ धननपालाहानिनः ॐ श्रवाकायः मिसपनकृष्ण

कायावः कुक्ष्यापोलनदः संधिः संधिः संधिः ॥ पालयापालसं
थिय ॥ ४॥ वादपालाहनि सगयावः उवनलं खन हाय ॥ धनमी ॥ पन
॥ कुक्ष्यपूमिसदुय ॥ थवः उवसः कुक्ष्यभूः ॥ आसनगयावः सधुः
वातय ॥ ॥ आयस्थालीकायावः ॥ ॐ वृद्धिं विना सैय भुम्भाय रुद्र
लं खन हाय ॥ ॥ थः धनगय ॥ ॐ जिह्वाकीलयनं गृययवोषद ॥ सा
य ॥ ॐ वृद्धिं विना भय भुम्भाय रुद्र ॥ लं खन हाय ॥ धनं धनं मद्राकन

वायव्यकीणसः हग्वालकायावः धनसहायक ॥ कुक्ष्यभूपाकायावः
सं सव्यानावः धनसहायकावमिसदाय ॥ ॐ श्रीं हृदयाय नमः ॥
कुक्ष्यभूपूच्यानावः धनसहायकावः वाय ॥ ॐ वाचं मुखं पदं सुम
यः कवचाय दूं ॥ ॥ कुक्ष्यपूकायावः धनसधूनावः भूनिदुय
॥ ॐ वृद्धिं विना भय भुम्भाय रुद्र ॥ हग्वालधनधूनावदुय ॥ का
लाउवालावन ॥ ॐ पूकुक्ष्यजानावः भूभूमनुगः धनसधूनावदुय

ये ००॥ ॐ पुंवदुत्तरपाथे ००॥ ॐ युं अग्निनकाथे ००॥ ॐ सहस्रसि
पददयाथे ००॥ ॐ स्वस्तिपूर्वसिनि ००॥ ॐ उगिष्ठपूषाय
सिपाथे ००॥ ॐ धूमवापिनकवचाय ००॥ ॐ सप्तजिह्वाय नृग
य ००॥ ॐ धनूर्ध्वनायाम्नाय ००॥ ॥ ॐ अग्नय आनवदस ००
॥ ॐ अग्नय सप्तजिह्वाय ००॥ ॐ अग्नय हव्यवाहनाय ००॥ ॐ
अग्नय रश्मिदनेजाय ००॥ ॐ अग्नय वैश्वाननाय ००॥ ॐ अग्नय

कीमाननजाय ००॥ ॐ अग्नय विश्वमूखाय ००॥ ॐ तितिक मूर्तिमन्
य के कामाक्षिनिदत्वा ॥ ॐ लां नृन्दाय ००॥ ॐ वां अग्नय ००॥ ॐ मा
यमाय ००॥ ॐ कां मे सत्यय ००॥ ॐ वां वनूनाय ००॥ ॐ यां वायव
००॥ ॐ साकूवनाय ००॥ ॐ हां नृणां नाय ००॥ ॐ अं अन्ननाय स्वा
हा ॥ ॐ वक्त्रा स्वाहा ॥ ॐ निरुन्दादि ॥ ॐ वं वज्राय ००॥ ॐ शं श
क्य स्वाहा ॥ ॐ दं दण्डाय स्वाहा ॥ ॐ खं खमाय ००॥ ॐ पं पाषाणाय

स्वाहा॥ॐ अं धं जा य ००॥ॐ गं गज य ००॥ॐ ङं वि भू ला य ००॥
ॐ सं च का य ००॥ॐ यं क म गु ल य स्वाहा॥ॐ ति भ म्भु दु नि ॥ ॥
गु पा ग न य मा ल ॥ॐ ००॥ॐ श्रीं ००॥ॐ श्रीं कीं ००॥ॐ कीं कीं ००॥ॐ श्रीं
कीं कीं रं श्रीं ग ल प न य व न व न द ००॥ॐ श्रीं कीं कीं रं श्रीं ग ल प न य व
न र द स र्वे ज नं भ व ठा मा न य ००॥ॐ ति ग ल प न्ना दू नि ॥ ॥ ध न भू
नि या द धू स रू द्ध व गा या ध्वा न या य ॥ च क सें थ व रू द्ध व गा

या पी ० पू जा या य ॥ अ नि त्र थ व रू द्ध व गा व उ भा ल पा व ध ल
आ दू नि वि य धा न २०॥ अ नि द व थ व उ राल पा व मूल म न्द्र ग
धा न ११ आ दू नि वि य ॥ ध य आ ना डि सं धा न ॥ अं ग द व या न प नि
वा न या न धा न १ ध ल इ य ॥ इ ति धृ ता दू नि ॥ ॥ न नः मि ला दु
नि ॥ वी हि पा रू र्ध नं ॥ ध न धृ ता दू नि रं ध व च्छा दू नि वि य
॥ ध ल क सि हा स्र मूल म न्द्र ग दा य धा न ३ ॥ ध व रू द्ध व गा धा

ॐ श्रीवगलाये नमः ॥ अस्य श्रीवगलामुखीसोत्रमंत्रस्य नारदः अपि सृष्टु
 द्युः श्रीवगलामुखीदेवता हीवीजं स्वाहा शक्तिं शुभं सिद्धये विनि
 योगः ॥ ॥ त्रिशुलधारिणी मर्मां सर्वसौभाग्यदायिनी ॥ सर्वभरशोभा
 शां देवी ध्यात्वा प्रपूजयेत् ॥ ॥ चलत्कनककुराडलोहसितचारुगराड
 स्थलालसत्कनकचंपकश्रुतिनिभां सुचन्दाननां ॥ गडाहतविपक्षका
 कलितलोलजिह्वां चरं स्मरामिव गलामुखी विमुखसन्मुखस्त

मि२

मिनीमू॥ १ ॥ पीयूषोदभिर्मध्यचारुविलसदन्नोपलेपमंडपे
 यत्सिंहासनमौलिघांतरिपुप्रेतासनाध्यासिनीमू॥ स्वर्गाभांकर
 पीडितारिरसनां भ्राम्यकूगडाविभ्रमामित्थंध्यायति यांति तस्य
 विलसं सशोऽथर्वोपदः ॥ २ ॥ देवित्वचरणां स्तुजार्चनयुतेयः पी
 पपूष्पांजलिभक्तावामकरे विधाय च मनुमन्त्री मनोज्ञाक्षरं ॥ पीत
 ध्यानपरोऽथ कुंभकवशावीजं स्मरेत्पाथिवं तस्यामित्रमुखस्य वा

विहृदये संभवेतक्षरात् ॥ ३ ॥ वादीमूकतिरंकटिक्षितिपतिवैश्या
 नरः शीततिः क्रोधी शांपतिदुर्जनः सुजनतिक्षिप्रानुगः खंगति ॥ ग
 दीखर्वती सर्वविद्युजडतित्वमत्रिरा मन्त्रितः श्रीनित्येवगला
 सुखिप्रतिदिनं कल्पानितुभं नमः ॥ ४ ॥ मन्त्रसावदलं विप्रक्षद
 लनेस्तोत्रं पवित्रं च ते यन्त्रं वादिनियन्त्रं त्रिजगतां जेतुं तु चित्तं
 लभेत् ॥ मातः श्रीवगलेति नामललितं यस्यास्मि जन्तोर्मुखे तं ना

मगेहरोनसं सदिमुखं संभो भवेद्वादिनाम् ॥ ५ ॥ दुष्टसंभनमु
 यविघ्नसमनंदारिद्रविद्रावरां भूभृद्भूशमेनंचलत्सुगदशां च
 नः समाकर्षणम् ॥ सौभाग्येकनितेननं ममदृशः कारुरापपू
 रीक्षनन्मन्योर्मोरेणामाविरत्नपुरतो मातः सुदीयंवपु ॥ ६ ॥
 मातर्भजयमदिपक्षवदनं जिह्वां चलां कीलयः ब्राह्मीमुद्रपदे
 वदेत्यभिषरा मुद्रांगतिं स भय ॥ शत्रुं शूराय चाशुदेविगद

